भक्ति योग सागर

भाग–४

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के साथ सत्संग

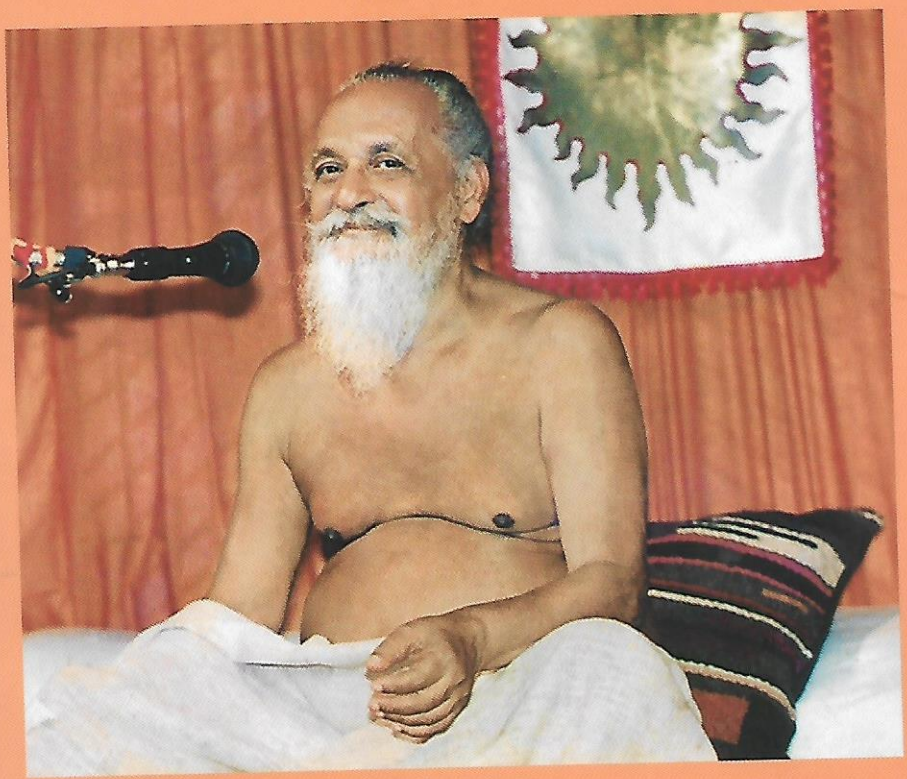

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार

भक्ति योग सागर-४

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के साथ सत्संग

श्री पंचदशनाम परमहंस अलखबाड़ा में
२६ नवम्बर से २४ दिसम्बर १९९६ तक आयोजित
रामनाम आराधना उत्सव के अवसर पर
श्री स्वामीजी द्वारा दिये गये सत्संग

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

SATYANANDA YOGA
BIHAR YOGA

मुझे राज्य नहीं चाहिए। सुख एवं आराम नहीं चाहिए। जीवन से, जन्म और मृत्यु से मुक्ति नहीं चाहिए। केवल एक चीज चाहिए– मैं दुःखी लोगों की मदद कर सकूँ। न केवल मानसिक और शारीरिक दुःख, बल्कि व्यावहारिक दुःख, जो तुम्हारे रसोई घर, शय्या कक्ष और शौचालय में रहता है। हजारों की संख्या में लोग पूरे विश्व में पीड़ित हैं। मेरे पड़ोसी पीड़ा में हैं, मैं ही नहीं, कोई भी इसके बारे में नहीं सोचता।

तुम शान्ति के बारे में सोचते हो। शान्ति को मारो गोली। शान्ति का क्या करोगे तुम? शान्ति तो निजी चीज है, व्यक्तिगत चीज है। शान्ति से तुमको शान्ति मिल गयी। मगर इन दुनियावालों का क्या होगा? तुम हँसते रहोगे हम रोते रहेंगे? वाह भाई! नहीं। मेरे को शान्ति नहीं चाहिए। मेरे को जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति भी नहीं चाहिए। बार-बार जन्म लेना है। मैं इसलिए वापसी का टिकट लेकर जा रहा हूँ।

YOGA PUBLICATIONS TRUST

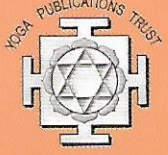

ISBN: 978-81-86336-19-9
9 788186 336199